PanchangBodh

विवाह बोध

विवाह रिपोर्ट

विशेष रूप से तैयार

अनीता शर्मा

12 मार्च 1990 · 06:40 · जयपुर, राजस्थान, भारत

लग्न: कुंभ · जन्म-समय: अस्पताल में दर्ज समय



सप्तम भाव	सप्तमेश	दारकारक	चंद्र नक्षत्र
सिंह	सूर्य	चंद्र	उत्तरा फाल्गुनी

तैयार: 10 नवंबर 2026

केवल नमूना पृष्ठ · पूरी रिपोर्ट में 73 पृष्ठ हैं
अनीता शर्मा एक काल्पनिक व्यक्ति हैं

यह रिपोर्ट वैदिक ज्योतिष के शास्त्रीय और पारंपरिक नियमों से आपकी जन्म-कुंडली का शैक्षिक अध्ययन है, जिसकी गणना पंचांगबोध ने की है। यह शास्त्रों में दिखने वाली प्रवृत्तियाँ बताती है; किसी परिणाम का वचन नहीं देती, विवाह की तिथि तय नहीं करती और किसी व्यक्ति पर निर्णय नहीं देती। यह परिवार की सलाह, या चिकित्सा, कानूनी और आर्थिक परामर्श का विकल्प नहीं है। इसमें बताया गया हर उपाय केवल शैक्षिक उद्देश्य से है। विवाह का निर्णय, उसका समय और जीवनसाथी का चुनाव आपके अपने हैं।

केवल नमूना पृष्ठ · पूरी रिपोर्ट में 73 पृष्ठ हैं
अनीता शर्मा एक काल्पनिक व्यक्ति हैं

विषय-सूची

आपका विवाह, संक्षेप में 5

पाठ-विधि: यह पुस्तक कैसे पढ़ें 7

आधार

1 कुंडली गणना 11
जन्म-कुंडली, नवांश और सप्तमांश; हर ग्रह जाँचने योग्य।

2 कुंडली के प्रमुख संकेत 14
वे पाँच से सात बातें जिन पर यह कुंडली बार-बार लौटती है।

सप्तम भाव और उसके कारक

3 सप्तम भाव का पूरा लेखा-जोखा 16
विवाह का भाव स्वयं: उसकी राशि, उसके ग्रह और उसका स्वामी, एक ही पट पर।

4 विवाह के कारक: शुक्र, गुरु, मंगल 19
शुक्र, गुरु और मंगल, और तीन बिंदुओं से पढ़ा गया सप्तम।

5 नवांश: विवाह की अपनी कुंडली 21
नौवाँ विभाग, ग्रह-दर-ग्रह: वह किस बात की पुष्टि करता है और क्या बदलता है।

6 जैमिनी की दृष्टि: दारकारक और उपपद 24
दारकारक और उपपद: विवाह पर जैमिनी की दूसरी दृष्टि।

7 मंगल और विवाह: मांगलिक विचार 26
पंचांगबोध का अपना मांगलिक निर्णय, हर नियम, भंग और मतभेद के साथ खुलकर जाँचा हुआ।

विवाह-योग, झुकाव और गति

8 विवाह-योगों की जाँच 29
हर विवाह-योग की जाँच, उसकी भंग-शर्तों के साथ।

9 प्रेम विवाह या घर की पसंद: कुंडली का झुकाव 32
स्वयं के चुनाव और परिवार के चुनाव के मत, एक ऐसी तुला पर जो बराबर भी रह सकती है।

10 विवाह की गति: क्या बढ़ाता है, क्या थामता है 34
विवाह को क्या गति देता है और क्या थामता है, आमने-सामने, बिना किसी जोड़ के।

11 रिश्ते में आप: एक आईना 36
यह कुंडली कैसे स्नेह करती है, क्या चाहती है, कैसे बहस करती है और कहाँ रुकती है।

जीवनसाथी, दाम्पत्य और संतान

12 जीवनसाथी का चित्र 38
शास्त्रों में खींचा जीवनसाथी: स्वभाव, पृष्ठभूमि, दिशा और संकेत।

13 दाम्पत्य का नक्शा 41
दाम्पत्य को कहाँ सहारा मिलता है और कहाँ उसे परिश्रम चाहिए।

14 विवाह-बंधन की मज़बूती 43
बंधन को क्या सँभालता है, पहले पढ़ा गया, और ध्यान माँगने वाले काल।

15 संतान: सप्तमांश 46
पंचम भाव और सप्तमांश, केवल सहारे और समय के लिए पढ़े गए।

समय

16 विंशोत्तरी दशा: जीवन-रेखा पर विवाह के काल 49
हर महादशा एक रेखा पर, विवाह से उसके संबंध के रंग में।

17 अगले पाँच वर्ष: सप्तम को जगाने वाली अंतर्दशाएँ 52
अगले पाँच वर्ष, अंतर्दशा-दर-अंतर्दशा।

18 गुरु और शनि का गोचर और आपका सप्तम भाव 54
बंधन के लिए महत्वपूर्ण बिंदुओं पर गुरु और शनि का गोचर।

केवल नमूना पृष्ठ · पूरी रिपोर्ट में 73 पृष्ठ हैं
अनीता शर्मा एक काल्पनिक व्यक्ति हैं

19 साढ़ेसाती और ढैया: रिश्ते में शनि का दौर 58
चंद्र के चारों ओर शनि का दौर, एक कार्य-भार की तरह पढ़ा गया।

20 अनुकूल समय की सारणी 60
दस वर्षों के श्रेणीबद्ध काल; अगले दो वर्ष महीने-दर-महीने, हर काल अपने आधार के साथ।

विवेक और उपाय

21 गुण मिलान से पहले: आपकी अपनी कुंडली 64
आपके अपने कूट, और मिलान में किसके कम अंक की संभावना सबसे अधिक है।

22 शास्त्रोक्त उपाय 67
इस कुंडली के निर्बल बिंदुओं के लिए शास्त्रों के उपाय, सूचना के रूप में, सलाह के रूप में नहीं।

23 आपके प्रश्न — आपकी कुंडली से 69
पाठकों के दस प्रश्न, इसी कुंडली से उत्तर।

उपसंहार: सार-पट और आपके लिए प्रश्न 72

केवल नमूना पृष्ठ · पूरी रिपोर्ट में 73 पृष्ठ हैं
अनीता शर्मा एक काल्पनिक व्यक्ति हैं

आपका विवाह, संक्षेप में

विवाह-रिपोर्ट से पाठक जो प्रश्न लेकर आते हैं, हर एक का उत्तर आपकी कुंडली से दो-तीन पंक्तियों में, साथ में वह अध्याय जिसमें पूरा हिसाब है।

1 क्या मेरा विवाह होगा?

अध्याय 8

आपकी कुंडली में विवाह को इन योगों का सहारा है: सबसे दृढ़ हैं सप्तम भाव (7) या सप्तमेश पर गुरु और सप्तमेश केंद्र या त्रिकोण में (हर एक श्रेणी 2, अधिकतम 3), उनके बाद सप्तम भाव (7) पर शुभ ग्रह और विवाह योग (निःशुल्क जाँच वाला); उसकी गति और राह को आकार देने वाले योग: शुक्र के साथ शनि या राहु, जिन्हें अध्याय 8 आज के पाठ में पढ़ता है।

- सप्तम भाव (7) पर शुभ ग्रह · बनता है पर निर्बल
- विवाह योग (निःशुल्क जाँच वाला) · बनता है पर निर्बल
- सप्तम भाव (7) या सप्तमेश पर गुरु · श्रेणी 2, अधिकतम 3
- सप्तमेश केंद्र या त्रिकोण में · श्रेणी 2, अधिकतम 3 ●○○○○○

6 में से 1 विरुद्ध

2 विवाह कब?

अध्याय 20, 10

अभी चल रही ऋतु, नवंबर 2026, पहले से हरी है। आपकी कुंडली की सारणी में अगली हरी ऋतु जनवरी 2027 है, जब आपकी आयु 36 वर्ष होगी। अगले दस वर्षों में 3 और: जुलाई 2027; सितंबर – अक्टूबर 2027; अगस्त 2035 – अप्रैल 2036।

▼ **जनवरी 2027** 36 वर्ष पर

3 प्रेम विवाह या परिवार का चुनाव?

अध्याय 9

स्वयं का चुनाव: 7 मत बनाम 4, सबसे भारी पंचमेश और सप्तमेश का संबंध, मंगल और शुक्र एक राशि में और शुक्र के साथ राहु, बराबर-बराबर।



4 क्या मैं मांगलिक हूँ?

अध्याय 7

मांगलिक नहीं: मांगलिक दोष भंग (निरस्त)। मिलान में यह प्रश्न उठे तो दिखाने का पृष्ठ अध्याय 7 है।

5 जीवनसाथी कैसा होगा?

अध्याय 12

सप्तम राशि से आत्मविश्वासी और उदार, दारकारक से पोषक और संवेदनशील; पारंपरिक दिशा पूर्व; कार्यक्षेत्र का संकेत: लोक-सेवा, प्रशासन या ज़िम्मेदारी का पद। कुंडली में दूरी या आयु का कोई संकेत नहीं है।

6 रिश्ता किन बातों पर टिका है, और कब इसे ध्यान चाहिए?

अध्याय 14

बंधन को जो थामता है: नवांश सप्तमेश केंद्र या त्रिकोण में और सप्तम भाव (7) में स्थिर राशि। 2 योग बंधन से अतिरिक्त ध्यान माँगते हैं, उपपद से द्वितीय में पाप ग्रह और शुक्र के साथ शनि या राहु; जिन कालों में वे ऐसा करते हैं, अध्याय 14 उन्हें दिनांकित करता है।

नवांश सप्तमेश केंद्र या त्रिकोण में · सप्तम भाव (7) में स्थिर राशि

7 वैवाहिक जीवन मुझसे क्या माँगेगा?

अध्याय 13, 11

सहारा निकटता और व्यय से मिलता है; काम घर, शुक्र-मंगल की जोड़ी और चंद्र-शुक्र की जोड़ी में माँगा जाता है। उत्तरा फाल्गुनी में बैठे आपके चंद्र से, बंधन में सुरक्षित महसूस करने के लिए आपको सबसे अधिक चाहिए: भरोसेमंद वचन।

जीवनसाथी से संबंध · आपका अपना परिवार · घर · जीवनसाथी का परिवार और साझे साधन · निकटता और व्यय · शुक्र और मंगल · चंद्र और शुक्र

8 संतान कब?

अध्याय 15, 20

आपकी कुंडली में संतान के लिए सहारा: गुरु (2 पंक्तियों में), सप्तमांश लग्नेश केंद्र या त्रिकोण में और पंचमेश केंद्र या त्रिकोण में; धैर्य की माँग: सप्तमांश पंचमेश दुःस्थान में। आपके विवाह-काल के बाद संतान-पंक्ति पर पहली हरी ऋतु नवंबर 2027 है। पंक्ति जनवरी 2027 से पीली है, यानी आंशिक सहारा। बाद का कोई काल यह बताता है कि कुंडली का सहारा कब सबसे प्रबल है, यह नहीं कि कोई बात पहली बार कब संभव होती है; तिथियाँ बताती हैं कि शास्त्र सबसे अधिक सहारा कहाँ देखते हैं, उनसे पहले के समय के बारे में कुछ नहीं।

पंचम भाव (5) पर शुभ ग्रह · सप्तमांश लग्नेश केंद्र या त्रिकोण में · पंचम भाव (5) या पंचमेश पर गुरु · पंचमेश केंद्र या त्रिकोण में · सप्तमांश पंचमेश दुःस्थान में · ▼ नवंबर 2027

9 अभी क्या चल रहा है?

अध्याय 16, 19, 18

राहु की महादशा अक्टूबर 2027 तक चलती है, विवाह के लिए मिश्रित: उसकी अंतर्दशाएँ अधिक तय करती हैं। साढ़ेसाती अगस्त 2036 से आरंभ होती है। गुरु अभी सिंह से आपके सप्तम भाव या सप्तमेश तक पहुँचता है, वहाँ बैठकर या दृष्टि से, नवंबर 2026 – जनवरी 2027।

यह पृष्ठ क्या नहीं कहता: दिन, और व्यक्ति।

पाठ-विधि: यह पुस्तक कैसे पढ़ें

समञ्जन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ।
सं मातरिश्वा सं धाता समु देष्ट्री दधातु नौ॥

ऋग्वेद 10.85.47 · सूर्या-सूक्त, विवाह का सूक्त

"सब देवता हम दोनों के हृदय एक करें, जल उन्हें एक करें; वायु, धाता और दिशा देने वाली देष्ट्री हमें साथ जोड़ें।" परंपरा का सबसे पुराना विवाह-सूक्त हृदयों के मिलन की प्रार्थना करता है। वह इस मिलन को किसी कुंडली से नहीं पढ़ता, और यह पुस्तक भी नहीं पढ़ती।

यह पुस्तक क्या करती है

यह पुस्तक एक ही कुंडली पढ़ती है, आपकी, और उसे विवाह की दृष्टि से पढ़ती है: साझेदारी का भाव और उसका स्वामी, वे ग्रह जिन्हें शास्त्र विवाह का कारक मानते हैं, मांगलिक विचार, विवाह को सहारा देने या धीमा करने वाले योग, शास्त्रों में खींचा गया जीवनसाथी का चित्र, वैवाहिक जीवन, संतान, और अगले दस वर्षों के काल। हर कथन उस ग्रह-स्थिति का नाम लेता है जिससे वह निकला, और हर स्थिति कोई भी ज्योतिषी आपकी कुंडली से मिला सकता है।

यह पुस्तक उस पाठक के लिए लिखी गई है जिसका विवाह अभी नहीं हुआ है।

क्रम सोच-समझकर रखा गया है। हर अध्याय इसी से खुलता है कि आपकी कुंडली क्या कहती है और जीवन में उसका अर्थ क्या है; शास्त्र का सिद्धांत और पुस्तक का लगाया नियम अध्याय के अंत में, छोटे अक्षरों में हैं, ताकि गणना चाहने वाले को मिले और बाकी के रास्ते में न आए। जहाँ कोई अध्याय किसी कठिनाई का वर्णन कर सकता है, वहाँ वह पहले वह पढ़ता है जो आपको सहारा देता है। जहाँ आपकी कुंडली में वह कठिनाई है ही नहीं, वहाँ अध्याय अपनी पहली पंक्ति में यही कहता है।

हर अध्याय की बनावट

- निर्णय: इस विषय पर आपकी कुंडली क्या कहती है, कौन-सी ग्रह-स्थिति कहती है, और जीवन में उसका अर्थ क्या है; उस पाठक के लिए जो और कुछ न पढ़े।
- आपकी कुंडली में: गणना से निकले तथ्य और आपके अपने आँकड़ों से बना एक चित्र, साथ में एक पंक्ति कि उसमें क्या देखें।
- इसका अर्थ: आपकी कुंडली में जो ग्रह-स्थिति लागू है, उसके लिए एक अनुच्छेद, जो उसी स्थिति से शुरू होकर उसका फल बताता है; कोई शर्त तभी लिखी जाती है जब वह सच हो।
- इसे क्या बदल सकता है: अध्याय में एक ही जगह, जहाँ उसकी सीमाएँ लिखी हैं।
- यह अध्याय कैसे पढ़ा गया, छोटे अक्षरों में: शास्त्र का सिद्धांत, पुस्तक का लगाया नियम और उसका स्रोत, और शब्द तथा स्रोत।
- आधार: गणना की वे सटीक पंक्तियाँ जिन पर अध्याय टिका है, ताकि कुछ भी केवल भरोसे पर न मानना पड़े।

पुस्तक के आकलन-शब्द

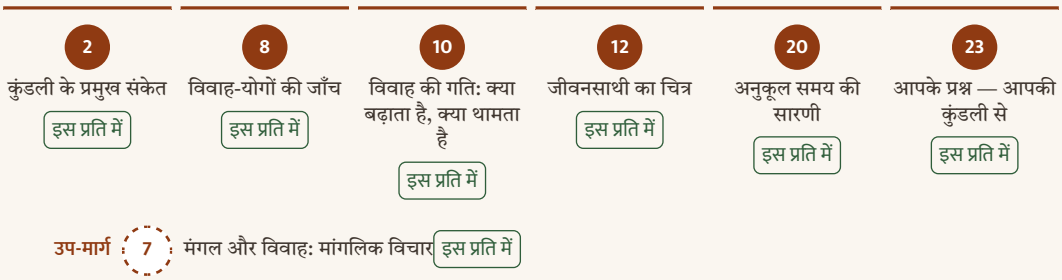
पुस्तक आकलन के लिए गिने-चुने शब्दों का प्रयोग करती है, और हर शब्द पूरी पुस्तक में एक ही अर्थ में आता है। वे सब यहाँ हैं।

योग	बना है · बनता है पर निर्बल · भंग · नहीं बना	कोई योग बना है, बनता है पर निर्बल है, किसी नामित शर्त से भंग है, या नहीं बना। भंग योग कमज़ोर योग नहीं है; शास्त्र उसे अनुपस्थित मानते हैं।
भाव	सबल · मिश्रित · निर्बल	कोई भाव सबल, मिश्रित या निर्बल होता है। निर्बल का अर्थ है कम सहारा: भाव को उसके स्वामी और ग्रहों से कम सहायता मिलती है। इसका अर्थ अभाव नहीं; जिस बात का वह भाव है, वह अनुपस्थित नहीं होती।
सारणी का महीना	हरा काल · पीला काल · गहरा पीला काल · ध्यान देने का काल	सारणी में महीना हरा तब होता है जब चल रही दशा और धीमे ग्रह दोनों उसका साथ दें, पीला जब एक साथ दे, गहरा पीला जब कोई भारी सावधानी सक्रिय हो, और ध्यान का चिह्न तब जब विवाह-बंधन स्वयं अधिक ध्यान माँगे। पुस्तक में लाल रंग नहीं है।

पुस्तक के दो पाठ-मार्ग

पूरा पाठ-मार्ग पुस्तक को क्रम से पढ़ता है। हर अध्याय अपने पहले के अध्यायों पर टिका है, इसलिए यही क्रम यह समझने का सबसे छोटा रास्ता है कि बाद का कोई अध्याय जो कहता है, वह क्यों कहता है।

यदि आपके पास तीस मिनट हों, तो छह पड़ाव पढ़ें: कुंडली के प्रमुख संकेत, विवाह-योग, विवाह की गति, जीवनसाथी का चित्र, अनुकूल समय की सारणी और आपके प्रश्न। यदि किसी निःशुल्क जाँच या पंडित ने आपकी कुंडली को मांगलिक बताया है, तो पहले अध्याय 7 का उप-मार्ग लें।



आपके जन्म-विवरण

नाम	अनीता शर्मा
जन्म	12 मार्च 1990 · 06:40
स्थान	जयपुर, राजस्थान, भारत · 26.91° उत्तर, 75.79° पूर्व
समय-क्षेत्र	ग्रीनविच से +5:30
जन्म-समय	अस्पताल में दर्ज समय
लग्न	कुंभ
चंद्र	कन्या · उत्तरा फाल्गुनी
अयनांश	लाहिरी (चित्रपक्ष), 23° 43′ 12″
रिपोर्ट की तिथि	10 नवंबर 2026

इस पुस्तक का हर पाठ इन्हीं विवरणों से निकला है। इनमें से कोई गलत हो, तो उस पर टिके पाठ भी साथ बदल जाते हैं, इसलिए पहले इन्हें जाँच लेना उचित है।

केवल नमूना पृष्ठ · पूरी रिपोर्ट में 73 पृष्ठ हैं
अनीता शर्मा एक काल्पनिक व्यक्ति हैं

क्या नहीं मिलेगा

- कोई विवाह-तिथि नहीं। केवल काल — श्रेणीबद्ध, दिनांकित और आधार सहित — कभी एक दिन नहीं।
- न “आपका विवाह होगा”, न “आपका विवाह कभी नहीं होगा”। कोई कुंडली “कभी विवाह नहीं” नहीं कहती; यह रिपोर्ट भी नहीं। ग्रंथ बताते हैं कि क्या विवाह को सहारा देता है और क्या उसे धीमा करता है; यह रिपोर्ट दोनों छापती है। एक ही हाँ-या-नहीं यह छापती है — मांगलिक — क्योंकि ग्रंथ उसकी नामित शर्तें देते हैं, और यह वे शर्तें छापती है।
- जीवनसाथी का नाम, आद्याक्षर, जाति, धर्म या समुदाय नहीं। कुंडली अधिक से अधिक “भिन्न पृष्ठभूमि” कहती है।
- अलगाव या तलाक पर कोई फ़ैसला नहीं। बंधन को उसी के लिए पढ़ा जाता है जो उसे थामता है, और ध्यान माँगने वाला हर काल एक काल के रूप में नामित और दिनांकित होता है।
- संतान की संख्या नहीं, बेटा या बेटी नहीं, संतान-क्षमता पर कोई फ़ैसला नहीं — ये प्रश्न डॉक्टर के हैं। सप्तमांश केवल सहारे और समय के लिए पढ़ा जाता है।
- न “मांगलिक को मांगलिक से ही विवाह करना चाहिए”। अध्याय नियम, उसके भंग और वे स्थान छापता है जहाँ ग्रंथ आपस में असहमत हैं।
- अष्टम भाव (8) से — या कहीं से भी — जीवनसाथी के स्वास्थ्य या आयु पर कुछ नहीं; अष्टम केवल जीवनसाथी के परिवार और साझे साधनों के लिए पढ़ा जाता है।
- जाति, समुदाय, धर्म या दहेज कभी नहीं — न चित्र में, न झुकाव में, न उपाय में, न प्रश्न-पट में। और जीवनसाथी के लिए कोई लिंग-निर्णय नहीं; रिपोर्ट “जीवनसाथी” कहती है।
- विवाह का कोई एक अंक नहीं — न प्रतिशत, न “विवाह-योग 78%”। योगों की जाँच-सूची, दो-तरफ़ा गति-पट्टी, झुकाव-तुला और दिनांकित काल-जाल, हर एक अपना हिसाब दिखाता है।
- न कोई रत्न बेचा जाता है, न किसी दुकान की कड़ी, न कोई सटीकता-प्रतिशत, न डर दिखाकर कोई बिक्री।

यह रिपोर्ट बताती है कि शास्त्र आपकी कुंडली में क्या देखते हैं। विवाह का निर्णय, उसका समय और जीवनसाथी का चुनाव — ये सब आपके हैं, कुंडली के नहीं।

अध्याय 3 · सप्तम भाव और उसके कारक

सप्तम भाव का पूरा लेखा-जोखा

इस खंड में आगे · सप्तम भाव और उसके कारक

4 प्रेम और विवाह का ग्रह शुक्र मकर में स्थिर है: आपका स्नेह भरोसेमंद है, बिना उतार-चढ़ाव के।

5 नवांश, यानी विवाह की अपनी कुंडली, नौ ग्रहों में से 1 के लिए आपकी जन्म-कुंडली के संकेत की पुष्टि करता है, 3 के लिए उसका रूप बदलता है, और 5 को कम सहारा देता है।

6 जैमिनी की पद्धति चंद्र को आपका दारकारक, यानी जीवनसाथी का ग्रह, बताती है और विवाह-बिंदु उपपद को वृश्चिक में रखती है।

7 शास्त्रों के अपने नियम से आप मांगलिक नहीं हैं: 3 में से 2 दृष्टियों से मंगल मांगलिक भाव में है, पर मंगल स्वराशि या उच्च राशि में (भंग नियम 1) लागू है, और भंग हुआ दोष दोष नहीं।

मेरी कुंडली में विवाह का योग कैसा है?

संक्षिप्त उत्तर

आपका सप्तम भाव मिश्रित है: उस पर सिंह है, और उसका स्वामी सूर्य प्रथम भाव (1) में बैठा है; साझेदारी को जो चाहिए, उसमें से कुछ सहज मिलता है और कुछ प्रयास से। किसी समय कौन-सा पक्ष आगे रहता है, यह भाव का नहीं, समय का प्रश्न है।

आगे का हर अध्याय इसी पृष्ठ पर खड़ा है; पट तौल दिखाता है।

◆ आपकी कुंडली में

बाईं ओर सप्तम भाव और दाईं ओर उसका स्वामी, जहाँ भी वह बैठा हो; पट के नीचे का अंक बताता है कि किन कारकों ने कितना तौला।

7	
सप्तम भाव · सिंह	
राशि	सिंह · स्थिर राशि
इसमें ग्रह	कोई नहीं
इस पर दृष्टि	सूर्य, मंगल और बुध
पापकर्तरी	नहीं
अर्गला	अर्गला प्रभावी
आकलन	मिश्रित

→ स्वामी प्रथम भाव में

सप्तमेश · सूर्य	
स्थिति	प्रथम भाव · केंद्र
राशि	कुंभ · सम राशि
नक्षत्र	पूर्वा भाद्रपद
इस लग्न के लिए	कार्यात्मक सम
साथ में	बुध
इस पर दृष्टि	गुरु और शनि
संकेत	कोई नहीं

सप्तम भाव (7) का आकलन, अंक के कारण: सप्तमेश की स्थिति +1, सप्तम भाव पर दृष्टि −1, नवांश-सप्तमेश का भाव +1

◆ इसका अर्थ

सप्तम की राशि। आपके सप्तम भाव पर सिंह है, एक स्थिर राशि: ऐसा बंधन जो एक बार बन जाए तो अपना रूप बनाए रखता है।

सप्तम पर क्या है। सप्तम में कोई ग्रह नहीं बैठा। खाली भाव कमज़ोर भाव नहीं है: उसे उसके स्वामी से पढ़ा जाता है, और आपका सप्तम अपना काम वहीं करता है। सप्तम पर सूर्य, मंगल और बुध की दृष्टि है, शुभ और कठोर साथ, इसलिए सहारा और दबाव दूर से एक साथ आते हैं।

सप्तमेश। सूर्य आपके सप्तम भाव का स्वामी है और प्रथम भाव में, एक केंद्र में, कुंभ में बैठा है, सम राशि। केंद्र में बैठा स्वामी कुंडली के चार स्तंभों में से एक पर खड़ा होता है, जिससे साझेदारी को दिखता हुआ, टिकाऊ सहारा मिलता है। उसके साथ बुध बैठे हैं, और सप्तमेश से जुड़ा ग्रह उसके फल देने के ढंग को रंग देता है; अध्याय 4 कारकों को उनके अपने रूप में पढ़ता है, और अध्याय 8 इन मेलों से बनने वाले योग जाँचता है।

सप्तमेश किसके अधीन है। कुंभ लग्न के लिए सूर्य कार्यात्मक रूप से सम है, अपने भावों से न मित्र, न बोझ, इसलिए उसकी स्थिति ही उसके लिए बोलती है। सूर्य से उसकी राशि के स्वामी तक, और वहाँ से आगे चलने पर सिलसिला किसी एक ग्रह पर समाप्त नहीं होता: वह शनि, गुरु और बुध के बीच घूमता है, जो एक-दूसरे की राशियों में हैं और एक-दूसरे के विषयों को सहारा देते हैं, इसलिए साझेदारी का फल यह पूरा घेरा मिलकर तय करता है।

सब मिलाकर। आपका सप्तम भाव मिश्रित पढ़ा जाता है: सिंह और उसका स्वामी सूर्य सहारा और माँगें दोनों उठाते हैं, और किसी समय कौन आगे रहता है, यह दशाओं का प्रश्न है, जिसका उत्तर अध्याय 16 से 20 में है।

◆ इसे क्या बदल सकता है

तीनों में मिश्रित आकलन सबसे कम पक्का है: एक अनुकूल दशा, या सप्तमेश की पुष्टि करने वाला नवांश, इसे किसी भी ओर झुका सकता है।

शास्त्र विवाह पर जन्म-कुंडली को अकेले नहीं बोलने देते। नवांश, यानी नौवाँ विभाग, इस पृष्ठ की हर बात की पुष्टि करता है या उसे बदलता है, और अध्याय 5 उसे पढ़ता है।

आधार

- सप्तम भाव में सिंह राशि
- सप्तम भाव की राशि सिंह, स्थिर राशि
- सप्तम भाव में कोई ग्रह नहीं
- सप्तम भाव पर सूर्य, मंगल और बुध की दृष्टि
- सप्तम भाव पापकर्तरी नहीं
- सप्तमेश सूर्य, प्रथम भाव
- सप्तमेश सूर्य, कुंभ राशि
- सप्तमेश सूर्य इस लग्न के लिए कार्यात्मक सम
- सप्तम भाव के संकेत: सप्तमेश केंद्र या त्रिकोण में और सप्तम भाव पर शुभ दृष्टि
- सप्तम भाव का आकलन: मिश्रित

यह अध्याय कैसे पढ़ा गया

◆ **सिद्धांत**

सप्तम भाव दूसरे व्यक्ति का भाव है: विवाह में जीवनसाथी, और बराबरी से जुड़ा हर बंधन। शास्त्र इसे वैसे ही पढ़ते हैं जैसे किसी भी भाव को, तीन बातों से: उस पर पड़ी राशि, उसमें बैठे या उस पर दृष्टि डालने वाले ग्रह, और सबसे बढ़कर उसका स्वामी, अर्थात् उस राशि का स्वामी ग्रह, कुंडली में वह जहाँ भी गया हो।

◆ **नियम, और उसका स्रोत**

भाव का स्वामी अच्छी जगह हो, केंद्र या त्रिकोण में और अनुकूल राशि में, तो भाव को सहारा देता है; छठे, आठवें या बारहवें भाव में बैठा, या सूर्य से अस्त स्वामी कम सहायता देता है। शुभ ग्रह भाव में हों या उस पर दृष्टि डालें, तो उसे सहारा देते हैं; पाप ग्रह उस पर दबाव डालते हैं, और जिस भाव के दोनों ओर पाप ग्रह हों, उसे घिरा हुआ कहा जाता है। ये शास्त्रीय नियम हैं। इन्हें तौलकर एक शब्द में कहना, सबल, मिश्रित या निर्बल, इस पुस्तक की अपनी रचना है, और तौल के अंक पट के नीचे छपे हैं ताकि गणना दिखती रहे।

◆ **शब्द और स्रोत**

सप्तम भाव	जीवनसाथी और बराबरी से जुड़े हर बंधन का भाव; ग्रंथों में कलत्र या युवती भाव।
सप्तमेश	सप्तम भाव पर पड़ी राशि का स्वामी ग्रह; वह जहाँ बैठता है, साझेदारी का काम वहीं होता है।
दुःस्थान	छठा, आठवाँ और बारहवाँ भाव: बाधा, गहराई और मुक्ति के भाव।
पापकर्तरी	वह भाव जिसके दोनों ओर के भावों में पाप ग्रह हों, जैसे कैंची के दो फलों के बीच।
कार्यात्मक स्वभाव	किसी विशेष लग्न के लिए ग्रह पक्ष में काम करता है या विरोध में; यह वहाँ उसके स्वामित्व वाले भावों से तय होता है।
अर्गला	सप्तम से दूसरे, चौथे या ग्यारहवें भाव में बैठे ग्रह की सप्तम पर अर्गला (चटखनी); बारहवें, दसवें या तीसरे के ग्रह उसे रोकते हैं, और रोकने वाले कम हों तो वह प्रभावी है, नहीं तो बाधित। कुंडली में कौन-सी है, यह पंक्ति बताती है।
सबल · मिश्रित · निर्बल	भाव के लिए इस पुस्तक की तीन श्रेणियाँ; निर्बल का अर्थ कम सहारा है, अभाव नहीं।

- बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, भाव-विचार और सप्तम भाव के अध्याय: भाव को उसके स्वामी, उसमें बैठे ग्रहों और उस पर पड़ी दृष्टियों से पढ़ा जाता है।
- सबल, मिश्रित और निर्बल की श्रेणी उन शास्त्रीय कारकों को पंचांगबोध की अपनी रचना से तौलती है; तौल के अंक पट के नीचे छपे हैं, और उन पर समीक्षा अभी खुली है।

अध्याय 7 · सप्तम भाव और उसके कारक

मंगल और विवाह: मांगलिक विचार

क्या मैं मांगलिक हूँ? कितना? क्या दोष कटता है?

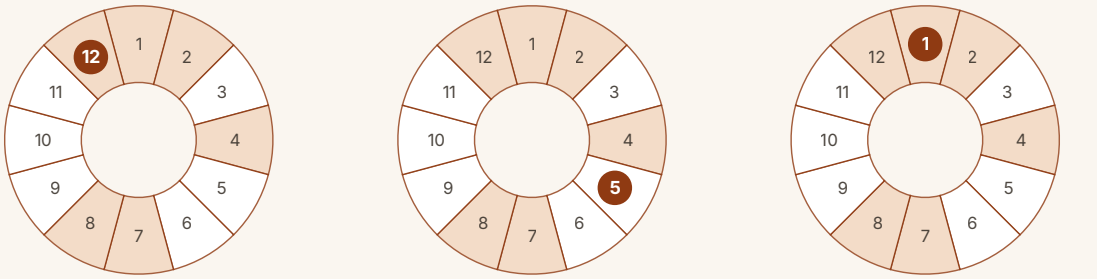
संक्षिप्त उत्तर

शास्त्रों के अपने नियम से आप मांगलिक नहीं हैं: 3 में से 2 दृष्टियों से मंगल मांगलिक भाव में है, पर मंगल स्वराशि या उच्च राशि में (भंग नियम 1) लागू है, और भंग हुआ दोष दोष नहीं।

वही निर्णय जो पंचांगबोध की निःशुल्क मांगलिक जाँच छापती है, उस पूरी गणना के साथ जो वह नहीं दिखाती।

◆ *आपकी कुंडली में*

हर दृष्टि का एक चक्र, जो बारह भाव अपने संदर्भ-बिंदु से गिनता है; छायांकित खाने में बैठा गोला मांगलिक स्थिति है।



लग्न से
मंगल द्वादश भाव (12) में, जो मांगलिक भाव है

चंद्र से
मंगल पंचम भाव (5) में, मांगलिक भावों से बाहर

शुक्र से
मंगल प्रथम भाव (1) में, जो मांगलिक भाव है

छायांकित खाने मांगलिक भाव हैं; भरा हुआ गोला मंगल है। हर चक्र अपने ही संदर्भ-बिंदु से गिनता है।

मांगलिक दोष भंग (निरस्त)

हर नियम हर कुंडली पर जाँचा जाता है और छापा जाता है, चाहे वह लागू हो या नहीं, ताकि कोई भंग भरोसे पर नहीं, जाँचकर माना जाए। भाव-अपवाद तीनों दृष्टियों से गिने जाते हैं, और मुहर बताती है कि पंक्ति किस दृष्टि से लागू है। अंतिम स्तंभ बताता है कि उस नियम पर स्रोत कहाँ अलग हैं।

नियम	इस कुंडली में	जहाँ ग्रंथ असहमत हैं
मंगल स्वराशि या उच्च राशि में (भंग नियम 1)	लागू	सभी संकलनों में मान्य।
द्वितीय भाव (2) में मंगल, मिथुन या कन्या में (भंग नियम 2)	लागू नहीं	बाद के संकलनों का अपवाद, पराशर का नहीं; यह वह सूची है जिसे पंचांगबोध की जाँच मानती है।
चतुर्थ भाव (4) में मंगल, वृषभ, तुला या वृश्चिक में (भंग नियम 3)	लागू नहीं	शुक्र की कौन-सी राशियाँ यहाँ गिनी जाएँ, इस पर संकलन असहमत हैं; जाँच दोनों लेती है, और वृश्चिक मंगल की अपनी राशि है।
सप्तम भाव (7) में मंगल, कर्क या मकर में (भंग नियम 4)	लागू नहीं	भाव-अपवादों में सबसे अधिक उद्धृत, मंगल की नीच और उच्च राशियों में।
अष्टम भाव (8) में मंगल, कर्क, धनु या मीन में (भंग नियम 5)	लागू नहीं	गुरु की राशियाँ सभी संकलनों में मिलती हैं; कर्क कम।
द्वादश भाव में मंगल, वृषभ, तुला या धनु में (भंग नियम 6)	लागू नहीं	धनु इस भाव का शास्त्रीय अपवाद है; शुक्र की राशियाँ बाद में जुड़ीं। कुछ परंपराएँ हर भाव-अपवाद को केवल लग्न से गिनती हैं।
मंगल पर गुरु की दृष्टि (भंग नियम 7)	लागू नहीं	व्यापक रूप से मान्य; कुछ ज्योतिषी सप्तम भाव पर गुरु की दृष्टि को भी स्वीकार करते हैं।
मंगल और चंद्र की युति (न्यूनता नियम 1)	लागू नहीं	आधुनिक ज्योतिषियों की प्रथा; यह दोष का भार घटाती है, उसे भंग नहीं करती।
मंगल और शुक्र की युति (न्यूनता नियम 2)	लागू	आधुनिक ज्योतिषियों की प्रथा; यह दोष का भार घटाती है, उसे भंग नहीं करती।

◆ *इसका अर्थ*

मंगल कहाँ है। लग्न से गिनने पर मंगल द्वादश भाव में है, जो मांगलिक भाव है; चंद्र से गिनने पर मंगल पंचम भाव में है, जो मांगलिक भावों से बाहर है; शुक्र से गिनने पर मंगल प्रथम भाव में है, जो मांगलिक भाव है।

भंग: मंगल स्वराशि या उच्च राशि में (भंग नियम 1)। 3 में से 2 दृष्टियों से मंगल मांगलिक भाव में है, और शास्त्रों के नियम से वह एक शर्त दोष को पूरी तरह भंग कर देती है; ऊपर की मुहर उसे दिखाती है।

लोक-धारणा	“मांगलिक का विवाह मांगलिक से ही होना चाहिए।”
शास्त्रीय शर्त	जो संकलन यह नियम मानते हैं, वे कहते हैं कि दोष तब संतुलित होता है जब जीवनसाथी की कुंडली में भी मंगल मांगलिक भाव में हो, या किसी एक कुंडली में भंग-शर्त लागू हो। यह दो कुंडलियों में जाँचने की शर्त है, यह नियम नहीं कि विवाह किससे हो।

मांगलिक, और जीवनसाथी जो मांगलिक नहीं

इस कुंडली में मांगलिक दोष नहीं है, इसलिए यह प्रश्न तभी उठता है जब किसी संभावित जीवनसाथी की कुंडली मांगलिक हो। तब यही जाँच उलटी दिशा में चलती है: उस कुंडली का दोष भंग है या नहीं, और जोड़ी में कुछ उसे संतुलित करता है या नहीं।

इस पर ज्योतिषी तीन कारणों से असहमत हैं: नियम सबसे पुराने ग्रंथों से नहीं, बाद के संकलनों से आया है; उत्तर और दक्षिण भारत द्वितीय भाव को अलग-अलग गिनते हैं; और भंग-शर्तें एक स्रोत से दूसरे में बदलती हैं। मिलान दोनों कुंडलियाँ पढ़ता है; यह पृष्ठ एक पढ़ता है।

दूसरे परिवार को क्या दिखाएँ

प्रश्न उठे, तो यह पृष्ठ दिखाएँ। इस पर हर नियम जाँचा हुआ है, और उसका उत्तर देने वाली शर्त एक बार कागज़ पर लिखी है, ताकि बात बहस से नहीं, स्पष्टता से सुलझे।

◆ *इसे क्या बदल सकता है*

निर्णय तीन बातों पर टिका है: लग्न की दृष्टि के लिए जन्म-समय; भावों की कौन-सी सूची ली गई; और कोई परंपरा कौन-सी भंग-शर्तें मानती है। दूसरी परंपरा उसी कुंडली से दूसरा निर्णय पढ़ सकती है; यह पुस्तक पंचांगबोध का अपना निर्णय और उसके पीछे का हर नियम छापती है, ताकि अंतर दिखे और उस पर बात हो सके।

आधार

- लग्न से मंगल द्वादश भाव में
- चंद्र से मंगल पंचम भाव में
- शुक्र से मंगल प्रथम भाव में
- मांगलिक भाव: 1, 2, 4, 7, 8, 12
- लागू भंग नियम: 1
- लागू न्यूनता नियम: 0
- इस लग्न के लिए मंगल योगकारक नहीं
- मांगलिक दोष भंग (निरस्त)

यह अध्याय कैसे पढ़ा गया

◆ **सिद्धांत**

मांगलिक नियम कहता है कि कुंडली के कुछ भावों में बैठा मंगल विवाह पर भार डालता है। पर जो ग्रंथ यह नियम मानते हैं, वही यह भी मानते हैं कि अपनी किसी नामित शर्त से भंग हुआ दोष कमज़ोर दोष नहीं, दोष ही नहीं है। इस अध्याय में यह बात सबसे पहले आती है, क्योंकि आगे की हर बात इसी से पढ़ी जानी चाहिए: प्रश्न केवल यह नहीं कि मंगल कहाँ है, यह भी है कि कौन-सी शर्तें उसका उत्तर देती हैं।

◆ **नियम, और उसका स्रोत**

यह पुस्तक वही नियम लगाती है जो पंचांगबोध की निःशुल्क मांगलिक जाँच लगाती है, बिना किसी बदलाव के: भाव 1, 2, 4, 7, 8, 12 में मंगल, तीन बार गिना हुआ, लग्न से, चंद्र से और शुक्र से। हर गिनती एक दृष्टि है। सात नामित शर्तें दोष को भंग करती हैं, और दो युतियाँ उसे घटाती हैं। भावों की यह सूची और इसकी शर्तें पराशर से नहीं, बाद के संकलनों और जीवित परंपरा से आई हैं, इसलिए यह पुस्तक इन्हें परंपरा कहती है, और हर नियम पर बताती है कि स्रोत कहाँ असहमत हैं।

◆ **शब्द और स्रोत**

मांगलिक	किसी संदर्भ-बिंदु से मांगलिक भावों में से किसी में मंगल; कुंडली की एक स्थिति, किसी व्यक्ति पर निर्णय नहीं। तीन श्रेणियाँ, न्यूनता गिनने के बाद मंगल को वहाँ रखने वाली दृष्टियों से: अल्प (एक), मध्यम (दो), प्रबल (तीनों)।
तीन दृष्टियाँ	लग्न, चंद्र और शुक्र: वे तीन बिंदु जिनसे भाव गिने जाते हैं।
भंग	वह नामित शर्त जो दोष को पूरी तरह हटा देती है; शास्त्र भंग दोष को दोष नहीं मानते।
न्यूनता	वह युति जो दोष का भार घटाती है, पर उसे हटाती नहीं।
कुज दोष	मांगलिक दोष का दूसरा नाम, मंगल के एक नाम कुज से।

- मांगलिक भावों की सूची और उसकी शर्तें बाद के संकलनों और जीवित परंपरा में मिलती हैं; बृहत् पाराशर होरा शास्त्र या जातक पारिजात में इस रूप में नहीं। यह पुस्तक इन्हें परंपरा कहती है और इनके लिए कोई श्लोक उद्धृत नहीं करती।
- निर्णय पंचांगबोध की गणना का है, वही जो निःशुल्क मांगलिक जाँच के पीछे है, बिना किसी बदलाव के लिया गया।

अध्याय 20 · समय

अनुकूल समय की सारणी

शादी कब होगी?

संतान का योग कब बनता है?

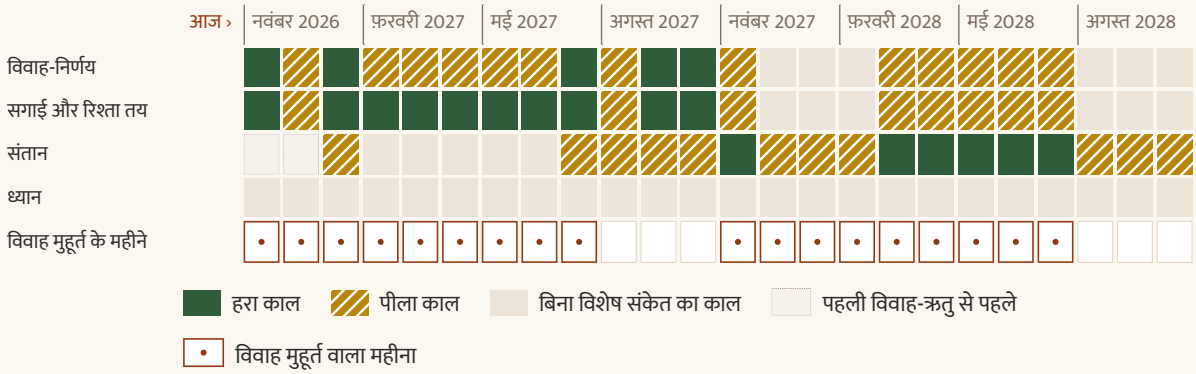
संक्षिप्त उत्तर

अभी चल रही ऋतु, नवंबर 2026, “विवाह-निर्णय” के लिए पहले से हरी है: इस महीने दोनों घड़ियाँ सहमत हैं। आगे की पहली पूरी ऋतु का नाम इसके बाद आता है। अगले दो वर्षों में “विवाह-निर्णय” के लिए पहला हरा काल जनवरी 2027 है, पहला ऐसा खंड जिसमें राहु-मंगल अंतर्दशा और सिंह में गुरु सहमत हैं।

सारणी बताती है कि आपका लिया हुआ निर्णय किस समय कुंडली के साथ चलता है।

◆ *आपकी कुंडली में*

अगले 24 महीनों में हर महीने का एक खाना, और हर तरह के निर्णय की एक पंक्ति; अंतिम पंक्ति उन महीनों पर चिह्न लगाती है जिनमें विवाह मुहूर्त के दिन हैं, सबके लिए एक जैसी।



गाढ़ा हरा: दोनों घड़ियाँ साथ देती हैं। धारीदार पीला: एक साथ देती है, या कोई हल्की सावधानी सक्रिय है। रेखांकित गहरा पीला: भारी सावधानी। बिंदुदार बैंगनी: ध्यान माँगने वाला काल। फीका: कोई विशेष संकेत नहीं। अंतिम पंक्ति में घेरे में बिंदु: विवाह मुहूर्त के दिनों वाला महीना।

अगले दो वर्षों के हर हरे काल के पीछे क्या है

	दशा	गोचर	अष्टकवर्ग बिंदु	दोहरा गोचर	पद्धतियाँ
नवंबर 2026	●	●	●	–	4 में से 3 पूरे काल
जनवरी 2027	●	●	●	–	4 में से 3 पूरे काल
जुलाई 2027	●	●	●	–	4 में से 3 पूरे काल
सितंबर – अक्टूबर 2027	●	●	●	–	4 में से 3 पूरे काल

भरा बिंदु: वह पद्धति काल के हर महीने का साथ देती है। खाली बिंदु: कुछ महीनों का। रेखा: किसी का नहीं। दोहरा गोचर यानी गुरु और शनि का एक साथ सप्तम भाव और उसके स्वामी पर पड़ना, दोनों में से हर एक भाव पर या स्वामी की राशि पर; या इसी तरह लग्न और उसके स्वामी पर।

◆ *इसका अर्थ*

विवाह-निर्णय

अभी हरा: नवंबर 2026। चल रही ऋतु इस पंक्ति में पहले से हरी है; आगे की पहली पूरी ऋतु वह है जिसका नाम आगे दिया गया है।

निर्णय की पंक्ति: पहला हरा जनवरी 2027। यह पंक्ति दशा में चल रही अंतर्दशा का विवाह से संबंध पढ़ती है, जैसा अध्याय 17 उसे अंक देता है (सप्तमेश, सप्तम में बैठा ग्रह, शुक्र, दारकारक, उपपद का स्वामी), और गोचर में सप्तम भाव या उसके स्वामी पर गुरु या दोहरे गोचर को; आधार बताता है कि इस काल को कौन-से ग्रह उठाते हैं।

दस वर्षों में हरे काल नवंबर 2026; जनवरी 2027; जुलाई 2027; सितंबर – अक्टूबर 2027; अगस्त 2035 – अप्रैल 2036

दस वर्षों में पीले काल दिसंबर 2026; फ़रवरी – जून 2027; अगस्त 2027; नवंबर 2027; मार्च – जुलाई 2028; फ़रवरी – अप्रैल 2029; अगस्त 2029 – जनवरी 2030; मई – अक्टूबर 2030; फ़रवरी – अप्रैल 2031; नवंबर 2031 – जनवरी 2032; अगस्त – अक्टूबर 2032; मई 2033 – अप्रैल 2034; मई – जुलाई 2035; मई – जुलाई 2036

दस वर्षों में गहरे पीले काल अगस्त – अक्टूबर 2036

जिन अकेले महीनों को ग्रह के स्थिर होने ने पीला रखा, जबकि दोनों घड़ियाँ साथ थीं: दिसंबर 2026 (गुरु और शनि); अगस्त 2027 (शनि)।

आधार

- विवाह-निर्णय: हरा काल, जनवरी 2027
- राहु-मंगल अंतर्दशा (सितंबर 2026 – अक्टूबर 2027): अंक +5, प्रबल
- गुरु का गोचर सिंह राशि में, 31 अक्टूबर 2026 से 25 जनवरी 2027 तक; भिन्नाष्टकवर्ग 4 बिंदु
- सप्तम भाव (7) में सिंह राशि
- सप्तमेश सूर्य

सगाई और रिश्ता तय

अभी हरा: नवंबर 2026। चल रही ऋतु इस पंक्ति में पहले से हरी है; आगे की पहली पूरी ऋतु वह है जिसका नाम आगे दिया गया है।

औपचारिक कदम: पहला हरा जनवरी – जुलाई 2027। सगाई या रिश्ता तय होना ग्रहों का बड़ा समूह पढ़ता है, जिसमें चंद्र भी है, इसलिए यह पंक्ति निर्णय वाली पंक्ति से अधिक बार हरी होती है।

दस वर्षों में हरे काल नवंबर 2026; जनवरी – जुलाई 2027; सितंबर – अक्टूबर 2027; अगस्त 2035 – जुलाई 2036

दस वर्षों में पीले काल दिसंबर 2026; अगस्त 2027; नवंबर 2027; मार्च – जुलाई 2028; फ़रवरी – अप्रैल 2029; अगस्त 2029 – जनवरी 2032; अगस्त – अक्टूबर 2032; मई 2033 – जुलाई 2035

दस वर्षों में गहरे पीले काल अगस्त – अक्टूबर 2036

जिन अकेले महीनों को ग्रह के स्थिर होने ने पीला रखा, जबकि दोनों घड़ियाँ साथ थीं: दिसंबर 2026 (गुरु और शनि); अगस्त 2027 (शनि)।

आधार

- सगाई और रिश्ता तय: हरा काल, जनवरी 2027 – जुलाई 2027
- शेष आधार वही हैं जो ऊपर विवाह-निर्णय के लिए दिए गए हैं

संतान

संतान की पंक्ति: पहला हरा नवंबर 2027। यह पंचमेश, गुरु और सप्तमांश के लग्नेश को पढ़ती है और कुंडली में सहारे का वर्णन करती है; चिकित्सा का निर्णय डॉक्टर का काम है।

दस वर्षों में हरे काल नवंबर 2027; मार्च – जुलाई 2028; फ़रवरी – मार्च 2029; अगस्त – अक्टूबर 2029; अगस्त – अक्टूबर 2032; मई 2033 – मार्च 2034

दस वर्षों में पीले काल जनवरी 2027; जुलाई – अक्टूबर 2027; दिसंबर 2027 – फ़रवरी 2028; अगस्त 2028 – जनवरी 2029; अप्रैल – जुलाई 2029; नवंबर 2029 – जनवरी 2030; मई – अक्टूबर 2030; फ़रवरी – अप्रैल 2031; नवंबर 2031 – जनवरी 2032; मई – जुलाई 2032; नवंबर 2032 – अप्रैल 2033; अप्रैल – अक्टूबर 2034

दस वर्षों में गहरे पीले काल अगस्त – अक्टूबर 2036

इस पंक्ति की दशा-घड़ी बुध, गुरु और सूर्य की दशाएँ हैं, जो संतान के स्वामी हैं; आधार में किसी अंतर्दशा के साथ छपा अंक अध्याय 17 का उसका विवाह-अंक है, इस पंक्ति की जाँच नहीं।

आपकी पहली विवाह-ऋतु से आगे पढ़ी गई, जो जनवरी 2027 में खुलती है; उससे पहले के महीने फीके छपते हैं।

आधार

- संतान: हरा काल, नवंबर 2027
- गुरु-गुरु अंतर्दशा (अक्टूबर 2027 – दिसंबर 2029): अंक +1, सामान्य
- गुरु का गोचर सिंह राशि में, 26 जून 2027 से 26 नवंबर 2027 तक; भिन्नाष्टकवर्ग 4 बिंदु
- पंचम भाव (5) में मिथुन राशि
- पंचमेश बुध

ध्यान देने के काल

ध्यान की पंक्ति। वे काल जिनमें विवाह-बंधन स्वयं अधिक ध्यान माँगता है: अध्याय 14 का कोई योग जिसके ग्रहों की दशा चल रही हो; सप्तम भाव या उसके स्वामी पर शनि का निर्बल गोचर (चार से कम बिंदु, वही जो ऊपर की पंक्तियों को गहरा पीला करता है); या निर्बल चंद्र के साथ साढ़ेसाती का शिखर।

- नवंबर 2029 – अप्रैल 2032
- अगस्त 2035 – अक्टूबर 2036 (सारणी के अंत तक)

आधार

- उपपद से द्वितीय में पाप ग्रह: बना है
- शुक्र के साथ शनि या राहु (ध्यान-पंक्ति): बना है
- शनि का गोचर सिंह राशि में, 27 अगस्त 2036 से 22 अक्टूबर 2038 तक; भिन्नाष्टकवर्ग 1 बिंदु
- सप्तम भाव में सिंह राशि
- सप्तमेश सूर्य

केवल नमूना पृष्ठ · पूरी रिपोर्ट में 73 पृष्ठ हैं
अनीता शर्मा एक काल्पनिक व्यक्ति हैं

आपकी सारणी में विवाह मुहूर्त के महीने

विवाह-निर्णय की पंक्ति के हरे और पीले महीनों में मुहूर्त के महीने: नवंबर 2026 – जुलाई 2027, नवंबर 2027 और मार्च – जुलाई 2028। दिन स्वयं पंचांगबोध के विवाह मुहूर्त पृष्ठ पर हैं; यह पुस्तक केवल महीनों के नाम लेती है।

मुहूर्त की सारणी बंद: अगस्त – अक्टूबर 2027। ये महीने वर्ष के बंद कालों में से किसी एक में पड़ते हैं, चातुर्मास या सूर्य के धनु या मीन में रहने के समय; वहाँ कोई हरा या पीला महीना निर्णय और रिश्ता पक्का करने के योग्य है, और विवाह-संस्कार मुहूर्त के अनुसार बाद में होता है।

मुहूर्त के महीने पंचांगबोध की विवाह मुहूर्त सारणी से नई दिल्ली के लिए निकाले गए हैं; महीने के भीतर के दिन शहर से बदलते हैं। दिन चुनना कुल-पुरोहित या मुहूर्त वाले पृष्ठ का काम है।

◆ *इसे क्या बदल सकता है*

हरा काल वह ऋतु है जिसमें आपका लिया निर्णय कुंडली के साथ चलता है, और उसके भीतर दिन का चुनाव आपका है। काल दो पद्धतियों की सहमति पर टिके हैं; किसी काल के बीच के महीने उसके पहले या अंतिम महीने से अधिक पक्के हैं।

यह अध्याय कैसे पढ़ा गया

◆ **सिद्धांत**

शास्त्र घटनाओं का समय दो घड़ियों से एक साथ देखते हैं। दशा, कुंडली का अपना काल-क्रम, बताती है कि किस ग्रह का समय चल रहा है; धीमे ग्रहों, गुरु और शनि, का गोचर बताता है कि आकाश अभी कुंडली पर क्या कर रहा है। विवाह के लिए काल अनुकूल तब होता है जब दोनों घड़ियाँ एक ही समय सप्तम भाव, उसके स्वामी या विवाह के ग्रहों की ओर संकेत करें। इससे एक ऋतु बनती है, कोई दिन नहीं।

◆ **नियम, और उसका स्रोत**

महीना हरा तब है जब चल रही अंतर्दशा विवाह का साथ दे और गोचर भी साथ दे, यानी गुरु, वहाँ कम से कम चार बिंदुओं के साथ, सप्तम भाव या उसके स्वामी पर पड़े, या गुरु और शनि दोनों एक साथ सप्तम और उसके स्वामी पर या लग्न और उसके स्वामी पर पड़ें (दोहरा गोचर), और कोई सावधानी सक्रिय न हो। पीला तब है जब इनमें से एक बात लागू हो, या दोनों लागू हों पर साथ में कोई हल्की सावधानी हो; और गहरा पीला तब, जब कोई भारी सावधानी सक्रिय हो, जैसे चार से कम बिंदुओं के साथ शनि का सप्तम या उसके स्वामी की राशि से गुज़रना। पहले 24 महीने महीने-दर-महीने पढ़े जाते हैं, और उसके बाद के आठ वर्ष तिमाही-दर-तिमाही। यह वही पद्धति है जो करियर रिपोर्ट अपने निर्णय-कालों के लिए अपनाती है, करियर की जगह विवाह की तालिकाओं के साथ।

सारणी केवल विवाह की कानूनी आयु से खुलती है, जो मार्च 2008 में पूरी हो चुकी है, इसलिए इसका हर महीना पढ़ने के लिए खुला है।

◆ **शब्द और स्रोत**

अंतर्दशा	दशा के भीतर का उप-काल; सारणी हर महीने में चल रही अंतर्दशा से विवाह की श्रेणी तय करती है।
गोचर	आकाश में ग्रह अभी कहाँ है, जन्म-कुंडली के सापेक्ष पढ़ा हुआ; यहाँ गुरु और शनि।
बिंदु	अष्टकवर्ग के 0 से 8 तक के अंक, जो बताते हैं कि कोई राशि गोचर करते ग्रह को कितना ग्रहण करती है; यहाँ चार या अधिक गिने जाते हैं।
दोहरा गोचर	गुरु और शनि का एक ही समय सप्तम भाव या उसके स्वामी की राशि पर (या लग्न और उसके स्वामी की राशि पर) बैठना या दृष्टि डालना, और वहाँ दोनों के 4 या अधिक बिंदु होना: विवाह के समय का एक प्रचलित आधुनिक संकेत, जिसे पारंपरिक गोचर-नियमों के साथ पढ़ा जाता है।
गहरा पीला काल	सारणी का सावधानी वाला रंग, भारी सावधानी वाले महीनों के लिए; पुस्तक में लाल रंग नहीं है।
ध्यान देने का काल	वह काल जिसमें विवाह-बंधन अधिक ध्यान माँगता है।

- शास्त्रों के दशा और गोचर के नियम, जिन्हें पंचांगबोध की अपनी रचना से श्रेणीबद्ध कालों में जोड़ा गया है (करियर रिपोर्ट की निर्णय-काल पद्धति, विवाह की तालिकाओं के साथ)।
- कानूनी आयु बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम, 2006 से है: पुरुषों के लिए 21 और महिलाओं के लिए 18 वर्ष; लिंग न बताया गया हो, तो 21 वर्ष।
- मुहूर्त के महीने पंचांगबोध की अपनी विवाह मुहूर्त सारणी से हैं, जो एक बार नई दिल्ली के लिए निकाली गई है।

तिमाही वही श्रेणी लेती है जो उसके अधिकतर महीनों की है। शनि के स्थिर होने (वक्री या मार्गी होने के मोड़) से अकेले महीने बदलते हैं, पूरी तिमाही नहीं। सारणी रिपोर्ट की तिथि से गिनी जाती है और उसके साथ आगे बढ़ती है।

चंद्र राशि के अनुसार महीने-दर-महीने का विस्तार चाहिए, तो पंचांगबोध की राशिफल 2027 रिपोर्ट उसी वर्ष को आकाश की ओर से पढ़ती है।